अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

# चूरू जिले के भित्ति चित्र एवं धार्मिक स्थिति

**डा. नरेन्द्र कुमार**
सहआचार्य, चित्रकला विभाग,
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

चूरू जिले में प्रारम्भ से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की सर्वाधिक संख्या रही है जिनमें कई धाराएं चली है, शैव, वैष्णव, शाक्त, नाथ विश्नोई, दाद् पंथी, अलखिया, परमहंस जयहरि आदि मुख्य रहे हैं। इनके अतिरिक्त जैन धर्म का भी चूरू में काफी प्रभाव एवं बाहुल्य रहा है जिसमें दिगम्बर पर्व श्वेताम्बर दोनों ही वर्ग रहे हैं तथा मुस्लिम प्रभाव के बाद इस्लामी तथा कुछ संख्या में सिक्ख व इसाई भी रहने लगे हैं।

**वैष्णव सम्प्रदाय**

इस सम्प्रदाय में भगवान विष्णु के व अन्य अवतारों तथा विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित करके उनकी उपासना की जाती है। यह सम्प्रदाय सम्पूर्ण भारत में लगभग सभी प्रान्तों में प्रचलित है। चूरू में भी अधिकांश ब्राह्मण, माहेश्वरी, अग्रवाल, खण्डेलवाल व अन्य जातियां इनकी बड़ी उपासक रही हैं। इनमें नियमित रूप से मन्दिर जाना व भगवान की उपासना करना मुख्य कार्य माना जाता है। इनके मुख्य त्यौहारों में रामनवमी, जन्माष्टमी, होली, दीपावली, राखी, दशहरा, एकादशी, आखातीज आदि होते हैं एवं विभिन्न उत्सवों व पर्वों पर इनमें दवी आदि की शोभा व रथ यात्राएं आदि भी निकाली जाती हैं।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

**नाथ सम्प्रदाय**

नाथ सम्प्रदाय के नाम सिद्ध मत, सिद्ध मार्ग, अवधूत मार्ग और बोग मार्ग आदि रहे हैं। ये लोग शिव को प्रधान देवता मानते हैं। ऐसा माना जाता है कि नाथ समप्रदाय शैवों की ही एक शाखा थी और गोरख नाथ इनके प्रमुख थे। इनके प्रथम आचार्य आदिनाथ को माना गया है। वे लोग षटचक्र और ताड़िका नियम एवं काय योग से सम्बन्धित थे। वर्ण रत्नाकर में छियन्तर संतों के नाम मिलते हैं इनमें मीननाथ, गोरखनाथ, चौरंगी नाथ, हलिका, चरपटी नाथ आदि भी शामिल किय गए हैं। इनकी मूर्तियां भी तेरहवीं शताब्दी के आस–पास डवोई बड़ोदा के पास से प्राप्त हो चुकी है, अतरू नाथ सम्प्रदाय पर अभी बहुत कम अध्ययन हुआ है इसलिए इसकी अधिक सामग्री प्रकाश में नहीं आ पाई है। सम्भव है कि मत्स्येन्द्र नाथ, जालंधर नाथ, समसामयिक थे। मत्स्येन्द्र नाथ के शिष्य गोरखनाथ थे और जालंधर के कृष्णपाद थे।

नाथ सम्प्रदाय में सबसे प्रमुख गोरखनाथ को ही माना जाता है। इन्होंने शैव सम्प्रदायों का संगठन किया तथा अपनी वाणियों को भी लिपि बद्ध किया। अपने धर्म एवं प्रचार–प्रसार के लिए इन्होंने अनेक स्थानों की यात्राएं की, जिससे इनके कई और शिष्य बने जिन्होंने बाद में अपने अलग–अलग सम्प्रदाय चलाए।78 चूरू जिले में नाथ सम्प्रदाय का पर्याप्त प्रभाव रहा है। नोहर के पास इनका एक प्राचीन मठ है जिस पर वि.सं. 1135 कार्तिक दूज का एक शिलालेख भी लगा हुआ है। यह मठ संवत् 1103 में बनाया गया था, इसके पास ही गोगामेड़ी स्थान पर दद्रेवा के चौहान राव राणा की समाधि बनी हुई है। इस समाधि से थोड़ी दूर पर ही गोरखनाथ तालाब, गोरखनाथ टीला व गोरख मठ है। यहां भी प्राचीन मठ है। फोगां, बाडन और सिद्धमुख आदि नाथों के प्रमुख स्थान रहे हैं।

बीदावतों की ख्यात में राव दूदा ने संध्वानाथ योगी को अपना गुरु बनाकर उसका आश्रम बीदासर के निकट घटियाला गांव में बनाया था।80 इसके अतिरिक्त तारानगर तहसील में तारानगर व साहवा गांव में भी नाथों के प्राचीन मठ रहे हैं जिनमें साहवा का मठ किलेनुमा है और इसमें एक शिवालय भी बना हुआ है। राजगढ़ तहसील में भी राजगढ़ थान मठोई, ढढाल आदि मठ हैं एवं यहां वर्तमान समय में भी मठ बनाए जाते रहे हैं, जिनमें चूरू का हाल ही में बनाया हुआ मठ बहुत सुन्दर व दर्शनीय है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

नाथों का चूरू क्षेत्र में काफी प्रभाव रहा प्रतीत होता है। इनके कई मठों में शिखरबन्ध मठ भी रहे हैं तथा अभी भी इनमें पूजा होती है। इनमें सातड़ा, दद्रेवा, देरासर की बणी, जापासर, लिविय, आसलखेड़ी, आलसर, मितासर, जवयसंघसर, गोलसर, माखऊ आदि के मठ उल्लेखनीय हैं।

**दशनामी**

दशनामी शंकराचार्य के शिष्यों में आते हैं। ये लोग ब्रह्म व निर्गुण के उपासक होते हैं तथा शिव मत की उपासना भी करते हैं। इनमें गृहस्थी और संन्यासी दोनों ही होते हैं। चूरू जिले में इनका पहले अत्यधिक प्रभाव था तथा इनके द्वारा बनाए गए मठ, मन्दिर और छतरियां आज भी उपलब्ध हैं। इनमें गुसाई रत्नपुरी ने वि. सं. 1778 सन् 1721 में एक मन्दिर बनवाया था। चूरू नगर में एक अन्य शिव मन्दिर भी इनके द्वारा बनवाया हुआ है और राजगढ़ में भी वि.सं. 1859 में भगतगिरी की समाधि पर शिव मन्दिर बनवाया गया था। दूधवा खारा में मठ बालगिरी की छतरी है जो कि वि.सं. 1779 फागुन बदी दूज को बनाई गई थी। इनके अन्य मठ बूचावास, रतनगढ़, नौमा, तारागढ़, मौलीसर, जस्सासर, बेरी, सात्यूं सरदार शहर, फोगा में भी है। गांव जोड़ी तहसील चूरू में भी दो मठ महत्त्वपूर्ण है एक मठ में वि.सं. 1763 ज्येष्ठ सुदि दूज का एक शिलालेख भी लगा हुआ ह तथा इस मठ के पास एक तिवारा भी बना हुआ है जिसमें भित्ति चित्र भी बने हुए हैं। महाराजा बीकानेर ने भी एक ताम्रपत्र संवत 1863 वैशाख सुदि अष्टमी को दिया था।

**जसनाथी सम्प्रदाय**

चूरू जिले में जसनाथी सम्प्रदाय का प्रभाव भी काफी अधिक रहा है। इस सम्प्रदाय को जसनाथ नामक आचार्य ने शुरू किया था। यह सम्भवतरू नाथों में बहुत प्रभावी था, किन्तु इन्होंने वैष्णवों में प्रचलित मान्यताएं भी मानी थी। ये नाथों की तरह कान चिरवा कर कुण्डल धारण नहीं करते हैं। इन्होंने भी अहिंसा को ही श्रेष्ठ माना है। जसनाथी लोग कुछ तो सिद्ध कहलाते हैं और कुछ जाट, इन सिद्धों द्वारा अग्नि नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। दहकते अंगारों पर सफलतापूर्वक ये नृत्य करते हैं। चूरू जिले के निम्न स्थानों पर इनके मठ आदि प्रसिद्ध है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

**लिखमादेसर का मठ**

यहाँ का संस्थापक हांसो नामक एक सिद्ध था। उसने संवत् 1599 में जीवित समाधि ली थी। इनके अतिरिक्त छरू अन्य संतों ने भी जीवित समाधि ली थी जिनमें गरीबदास, रामदास, धत्तूदास, खेतनाथ, लालनाथ और कुंभनाथ, इनमें लालनाथ साहित्यकार भी ये जिनके कई ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध हैं।

**घिन्टाल**

यहाँ जसनाथ के दो सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं एवं दो बाड़ियां भी बनो हुई हैं। पहली खाड़ी वालों की बाड़ी और दूसरी जाणी सिद्धों की है इनके अतिरिक्त यहां कई समाधियां भी बनी हुई हैं इनमें खेम चन्द की बहुत प्रसिद्ध है।

**छाजूसर**

यहाँ पर सिद्ध रुस्तम की समाधि है जो कि बहुत उल्लेखनीय संत हुए थे, इन्होंने जसनाथी सम्प्रदाय के लिए काफो कार्य किया था। ऐसा मानते हैं कि अग्नि नृत्य की परम्परा भी इन्होंने ही शुरू की थी। इन्होंने पहले लिखमादेसर रहकर वहीं दीक्षा ली और बाद में छाजूसर में आकर रहने लगे। इनके द्वारा रचित साहित्य में शिव ब्यावला और किशन ब्यावला प्रमुख रचनाएं है।

**पूनरासर**

यहाँ पर सिद्ध पालों बड़े चमत्कारी हुए थे। इनकी समाधि पर मन्दिर बना हुआ है, इनके अतिरिक्त जोओ सांखला भी एक प्रसिद्ध साधू व कवि रहे हैं। इनके द्वारा रचित श्जयझूलय अत्यन्त प्रसिद्ध है। इस बाड़ी में हेमाखाती, सती जसोदा व तीन अन्य सिद्धों की समाधि भी है। पाखेड़ा में पांचू नामक एक सिद्ध की समाधि है एवं बीनादेसर, भरपालसर, झन्जेऊ, बेगूसर आदि भी बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। बेगूसर में संवत् 1809 का एक लेख भी है तथा यहां पर भी कुछ भित्ति चित्र बने हुए हैं।

**विश्नोई सम्प्रदाय**

विश्नोई सम्प्रदाय का प्रचलन जाम्भोजी द्वारा किया गया था। इनका जन्म नागार जिले के पीपासर गांव में हुआ था। इनकी माता छापर द्रोणपुर के मोखम सिंह की बेटी थी। जांभोजी अपने माता–पिता के इकलौते बेटे थे। इनका जन्म विक्रम संवत् 1542

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

कार्तिक सुदि अष्टमी को गभावन गांव में जो सुजानगढ़ तहसील से लगा हुआ है में हुआ था और संवत् 1593 में इनका देहावसान हुआ। इनके द्वारा रचित सबद वाणी बहुत प्रसिद्ध है और इनका विचरण व प्रचार–प्रसार का क्षेत्र चूरू मुख्य रूप से रहा था। छापर, द्रोणपुर में इनका सम्बन्ध होने पर यहाँ इनका आना–जाना काफी रहा था। इनकी सबद वाणी में भी छापर, द्रोणपुर का उल्लेख है एवं इस सम्प्रदाय की कई बातों में चूरू जिले के कई गांवों का भी उल्लेख है। कथा गुगलिये की और कथा द्रोणपुर की इसी मण्डल से सम्बन्धित है। द्रोणपुर का मोती मेघवाल इनका परम भक्त था तथा विश्नोई साहित्य में भी जांभोजी ने इन्हें अपना प्रमुख भक्त माना था। चारण कवि कील्होजी सामौर जाति के और इस सम्प्रदाय के प्रमुख कवियों में थे। इनके अतिरिक्त गांव खुणिया तहसील सरदार शहर के बारहठ कान्हा भी इस सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं। विश्नोई सम्प्रदाय का सम्बन्ध द्रोणपुर, डूंगरगढ़ तहसील में ही अधिक है और ये लोग अपने धर्म में 29 नियमों की वजह से विश्नोई कहलाए, जो इस समय इन क्षेत्रों में ही अधिक है।

**दादू पंथी**

दादू पंथ का प्रचलन संत श्री दादू दयाल जी ने किया था। इनका आविर्भाव काल 16वीं शताब्दी माना जाता है, ये निर्गुण एवं निरंजन के उपासक रहे हैं, इन्होंने निर्गुण संतों की तरह मंन्दिर, मस्जिद, रोजा, नमाज, जाति–पाति, छापा, तिलक आदि को अनावश्यक बताया है। लेकिन इन्होंने अधिक खण्डन– मंण्डन नहीं किया है। इन्होंने अन्य संतों की तरह प्रेम, गुरु, भक्ति, सत्संग, माया, जीव, ब्रह्म आदि अनेक विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। इनके शिष्यों में सुन्दर दास, बहुत उल्लेखनीय हुए हैं ऐसी मान्यता है कि ये बीकानेर नरेश के भाई थे या उनके परिवार के सदस्य थे और बादशाह के आदेश के अन्तर्गत काबुल में युद्ध के लिए गए थे, लेकिन वहाँ घायल होकर अचेत हो गए। इन्हें वहाँ से हटाकर अन्य स्थान पर ले जाया गया एवं इनकी पत्नी मृत्यु का समाचार सुनकर सती हो गई। इस पर वे सांभर पहुँचे और वहाँ दादू जी के उपासक हो गए। कई लोग इन्हें भीम रियल बीदासर के पांखने बेटे भी मानते हैं। ये दादू सम्प्रदाय के एक उल्लेखनीय संत थे। इनके शिष्य प्रहलाद दास और प्रहलाद दास के शिष्य हरिदास हुए जिनमें नागा भायारूवनी दी। राघवदास जिन्होंने भक्तमाल लिखी थी, इन्हीं हरिदास के शिष्य थे।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

चूरू नगर में भी चार दादूद्वारे हैं और इनमें एक चोलावा कुंआ का स्थान सुन्दर दास जी के धागे का है। सुन्दर दास जी का सम्बन्ध दूर नगर, फतेहपुर, डीडवाना, सांगानेर, आमेर आदि गांवों में खूब रहा था। सुन्दर दास जी के शिष्य नारायण दास बहुत होनहार थे और उनके शिष्य रामदास थे और चूरू में ही इनका स्वर्गवास हुआ था। दवाराम के बाद सन्तोसदास जी हुए जिन्होंने चूरू में ही दवाराम और रामदास की चरण पादुकाएं स्थापित की थीं।

अब इस सम्प्रदाय में साधुओं की संख्या कम हो गई है और बारों दादू द्वारों में अब कोई संत नहीं है। रतनगढ़ के दादू द्वारे की स्थापना सहजराम ने की थी इन्होंने सुरति विलास नामक ग्रंथ भी लिखा था। इनके शिष्यों में लक्ष्मणदास के शिष्य चेतनानंद अच्छे विद्वान थे जिन्हाने बड़ी लगन से काशी में रहकर विद्या अध्ययन किया था। सरदार शहर में भी दादू द्वारा है जहां हनुमान जी की विशाल मूर्ति है और यहां के साधु अच्छे चिकित्सक भी हैं। इसी प्रकार रतनगढ़, राजगढ़ और तारानगर में भी दादू द्वारे थे जो अब खाली पड़े हैं।

**अलखिया सम्प्रदाय**

इस सम्प्रदाय को लालगिरी नामक एक चमार ने गांव सुलखनीया, तहसील रतनगढ़ से शुरू किया था। ऐसा माना जाता है कि जब ये पांच वर्ष के थे तब इन्हें एक साधु ले गया और इनका नाम लालगिरी रखा। कई वर्षों बाद जब लालगिरी को लेकर सुलखनीया आया तो वहाँ से उसे लालगिरो की जाति के बारे में मालूम होने पर इनका परित्याग कर दिया इससे लालगिरी बीकानेर चले गए और किले के निकट झोंपड़ा बनाकर रहने लगे और इन्होंने बीकानेर महाराणा पर अच्छा प्रभाव डाला और धीरे–धीरे इनकी मान्यता भी बढ़ने लगी, इन्होंने दान देने, जीव हिंसा न करन, मामावार का परित्याग करने एवं पवित्र जीवन बिताने पर बल दिया। लालगिरी के चमार होने पर भी बहुत से लोग उनसे प्रभावित होकर उनके शिष्य हो गए, इनमें लच्छीराम राकेता और उनका बेटा भानमल, जो बीकानेर राज्य में दीवान रहे थे वे उल्लेखनीय हैं। बाद में इन्होंने बीकानेर में अलखसागर नामक एक कुंआ भी बनवाया था। इनका प्रचार देखकर व मूर्ति पूजा से सम्बन्धित इनके सिद्धान्त के विरुद्ध महाराजा बीकानेर इनसे नाराज हो गए और इनको बीकानेर से निकलने का

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

आदेश दे दिया, वे वहाँ से चलकर जयपुर के गलता आ गए जहां पर इनकी मृत्यु होना भो माना जाता है।

**परमहंस सम्प्रदाय**

इस सम्प्रदाय के प्रमुख संतों में माऊनाय का नाम उल्लेखनीय है। माना जाता है, इनका स्वर्गवास चूरू में ही हुआ था। जहाँ उनकी समाधि बनी हुई है। इनके शिष्यों में प्रमुख मुक्तिनाथ और ज्ञाननाथ थे। मुक्तिनाथ के दो शिष्य लक्ष्मीनाथ एवं भगवान नाथ थे और ज्ञानीनाथ के शिष्य मोतीनाथ थे। इस प्रकार यह छोटा–सा सम्प्रदाय भी चूरू और उसके आस–पास काफी प्रभावशाली रहा। इनकी संत परम्परा में बखन नाथ और मंगल नाथ अत्यन्त प्रभावशाली संत रहे हैं जिसमें मंगलनाथ बहुत प्रसिद्ध साधु हुए हैं।

इनके अतिरिक्त जयहरि सम्प्रदाय अर्जुनदास के शिष्य नारायण दास ने प्रारम्भ किया था और इनका रतनगढ़ में काफी प्रभाव है। रतनगढ़ के अतिरिक्त दुलरासर, सुजानगढ़, दरीबा, धनेऊ, और नीमा में भी इनके स्थान हैं। इनके अतिरिक्त निम्बार्क सम्प्रदाय, राम स्नेही, रामावत, और चरणदासी सम्प्रदाय का भी काफी प्रभाव रहा है तथा आर्य समाज का भी यहां प्रचार–प्रसार हुआ है। गणपति शर्मा जो कि आर्य समाज के अच्छे व्याख्याता रहे हैं, जिन्होंने कई लोगों को विद्वत्ता में करारी हार दी थी का जन्म भी चूरू में ही हुआ था।

**जैन धर्म**

जैन सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव भगवान महावीर ने किया था और बाद में वह दो वर्गों में विभाजित हो गया, दिगम्बर एवं श्वेताम्बर। चूरू में भी जैन धर्म काफी लम्बे समय से प्रचलित रहा है और इसमें भी यहाँ श्वेताम्बरों की अधिकता व बोलबाला रहा है। यहां सबसे प्राचीन मन्दिर रेणी तारानगर का है जो कि दसवीं शताब्दी का है और इस मन्दिर का निर्माण वि.सं. 999 में किया गया था तथा इस मन्दिर की कई मूर्तियां बहुत प्राचीन हैं। जिनमें मुलनायक प्रतिमा पर वि.सं. 1058 का लेख भी है। एक अन्य प्रतिमा पदमावति पर वि. सं. 1065 का लेख है एवं कई मूर्तिया यहां 15वीं 16वीं शताब्दी में भी स्थापित की गई थीं। वहाँ यह मन्दिर बहुत प्राचीन है और खरतरगच्छ का अच्छा केन्द्र रहा है। दूसरा उल्लेखनीय मन्दिर अमरसर तहसील मुजानगाइ का है वहां पर रेत में से 14 धातु प्रतिमाएं व दो पत्थर की मूर्तियाँ कई वर्षों पूर्व मिली थीं जिन पर वि.सं. 1063 से लेकर 1232 दि.म.

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

तक के लेख हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह स्थान काफी प्राचीन जैन मन्दिरों में से रहा होगा लेकिन अब कोई मन्दिर नहीं है।

राजगढ़ में सुपार्श्वनाय का सुन्दर मन्दिर बना हुआ है जो कि बाद में 18वीं शताब्दी में बना है। इस मन्दिर में तीन मूर्तियां वि.सं. 1155 की पूजान्तर्गत है, किन्तु उनके लेख इतने अस्पष्ट हो गये हैं कि इनका अधिक विवरण नहीं दिया जा सकता। इस मन्दिर में दो अच्छे लेख भी हैं, एक वि.सं. 1867 व दूसरा वि.सं. 1920 का है। इनमें जिनहर्ष सूरि आदि खरतरगच्छ के साधुओं का उल्लेख है।

लाडनूं जो चूरू जिले से लगा हुआ है, वहाँ भी एक सुन्दर जैन मन्दिर बना हुआ है। वह भी पहले भूमिगत हो गया था और इस पर दूसरा मन्दिर बन गया था लेकिन इसकी खुदाई की तो वहाँ मन्दिर के कुछ अवशेष मिले। इस पर पूरी खुदाई करने पर बहुत–सी मूर्तियां एवं अच्छा नक्काशीदार मन्दिर निकाला गया।

**खतरगच्छ**

यह श्वेताम्बरों का प्रमुख गच्छ था जिसका प्रभाव बीकानेर एवं जैसलमेर में बहुत अधिक था तथा इनके प्रचारक एवं मुनि लोग चूरू क्षेत्र में भी बराबर आते रहते थे एवं यहाँ के मन्दिरों में भी इनका प्रभाव रहा है व इनमें से कई आचार्यों का जन्म भी चूरू क्षेत्र में हुआ था। जिनमें जिनसुख सूरि फोग पतंग के थे और वि. सं. 1762 में इन्हें गच्छ नायक बनाया गया था। इनके बाद जिनभक्त सूरि को बनाया गया था और इन जिनभक्त सूरि के बाद वह क्षेत्र खतरगच्छ के कई आबाबों का भी विचरण व पचार–प्रसार का स्थल रहा। चूरू में खतरगच्छ का बड़ा उपाश्रय शान्तिनाथ का मंन्दिर व दादाबाड़ी है। यहां के यति रिधिकरण बहुत प्रभावशाली रहे हैं।

**लोकागच्छ**

लोकागच्छ की स्थापना लोकोशाह ने की थी। यह अहमदाबाद में रहते थे जहाँ पर ग्रंथों की प्रतिलिपियां करते थे। जब ग्रंथों का अध्ययन करते समय साधुओं के क्रियाकलापों की तरफ ध्यान गया तो इन्होंने बड़ी निन्दा की, लोकागच्छ की स्थापना की, नागौरी लोकागच्छ इसकी एक शाखा है। इसके आचार्य कल्याणदास, सुराना शिवदास के पुत्र थे। लोकागच्छ का प्रभाव चूरू क्षेत्र में काफी अधिक है। इनके बाद लदजी मुनि हुए जिन्होंने

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

बाईस सम्प्रदाय का प्रचलन भी किया। ये लोग स्थानको में रहते हैं, इसीलिए इन्हें स्थानकवासी व बाईस टोला भी कहते हैं।

**तेरापंथ**

इस पंथ के संस्थापक आचार्य श्री खग जी थे, जिन्होंने मेवाड़ के केलवा राजनगर गांव में रह कर नवें सम्प्रदाय का प्रचलन किया जो आगे चलकर तेरापंथी नाम से प्रचलित व प्रसिद्ध हुआ। प्रारम्भ में इसका प्रचलन मेवाड़ और मारवाड़ में ही रहा किन्तु माधवगणि के समय इसका प्रचार चूरू जिले में बहुत अधिक हुआ और आज चूरू और मेवाड़ दो स्थान ही ऐसे हैं जहाँ इनके मानने वाले बहुत संख्या में हैं। इस सम्प्रदाय के बाद के आचार्य माणकगणि डालूगणि, कालूगणि एवं तुलसीगणि हुए हैं इन सबका सम्बन्ध चूरू जिले से रहा है। जनगणना के आंकड़ों के अनुसार इस क्षेत्र के जैनियों में 90 प्रतिशत तेरापंथी हैं।

**दिगम्बर सम्प्रदाय**

यहाँ दिगम्बर सम्प्रदाय का प्रचलन कम रहा है और केवल अग्रवाल परिवारों में ही कुछ जैन परिवार इस मत को मानते हैं। इस क्षेत्र में इनके तीन मन्दिर मुख्य स्थानों पर प्रमुख हैं, जो चूरू में एवं तारानगर में व सुजानगढ़ में है। चूरू में कई सरावगी भी हैं, जो दिगम्बर मतावलम्बी भी रहे हैं। चूरू एवं चूरू जिले में ज्ञात जैन मन्दिर व उपाश्रय निम्नांकित हैं –

| | | |
|---|---|---|
| चूरू | – | शान्तिनाथ मन्दिर, उपाश्रय, दादाबाड़ी, पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, लोकागच्छ का एवं बनियों का उपाश्रय। |
| डूंगरगढ़ | – | पार्श्वनाथ मन्दिर। |
| बिग्गा | – | शान्तिनाथ मन्दिर। |
| राजलदेसर | – | आदिनाथ मन्दिर एवं कमलागच्छ का उपाश्रय। |
| रतनगढ़ | – | आदिनाथ मन्दिर, दादाबाड़ी एवं खतरगच्छ का उपाश्रय। |
| तारानगर | – | शीतलनाथ मन्दिर, उपाश्रय एवं दिगम्बर जैन मन्दिर। |
| बाहढ़वास | – | उपाश्रय। |
| सुजानगढ़ | – | पार्श्वनाथ आदिनाथ के मन्दिर, खतरगच्छ के उपाश्रय, |

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

दो दादाबाड़ियां, दिगम्बर जैन मन्दिर एवं नसियां आदि।

इनके अतिरिक्त यहाँ अन्य धर्मावलम्बी भी रहे हैं, जिनमें कबीर पंथी, रैदास पंथी, गोगा पंथी व रामदेव पंथी आदि मतों के अनुयायी भी यहाँ पर निवास करते हैं जिनमें सर्व धर्म समभाव की भावना इस जिले के लिए प्रगति व उन्नति का प्रतीक रही है।

## संदर्भ

1. गोविन्द अग्रवाल–चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास पू. 392–93
2. संवत् 1788 – चौत्र पारी शुक्ला पश्चे नवम्या रविवारे गुसाई श्री पुरुषोत्तम पुरी जी, तत्सिष्य गुसाई रत्न पुरी जी, शिव मन्दिर करायो, अप्रकाशित लेख।
3. गोविन्द अग्रवाल – चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास पृ. 394–95
4. मूल ताम्रपत्र श्री चौखगिरि जी के पास है। इसका कुछ अंश अधोलिखित है : 'स्वास्ति भी राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि महाराजा श्री 108 श्री सुरत सिंह जी महाराज कुंवर रतन सिंह जी वचनातु श्री जी साहबा पुण्यप्रितकर गांव जोड़ी में महत ग्वान सिह भागीरथ गिर–रो उदै गौर र बेलै नू गा. जोड़ी में जमी, बीघा 5 संवत् 1863 वैशाख शुदीषु।
5. गोविन्द अग्रवाल, चूरू मण्डल का शोधपुर्ण इतिहास पृ. 399–401 राजस्थान भारती वर्ष व अंक।
6. वि. सं. 1809 चौत्र शुदी 10 महाराज श्री गजसिंह जी राज, औ जसनाथ जी रो दिवाली करायो छै जी, अप्रकाशित लेख।
7. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी–जाम्भोजी विश्नोई सम्प्रदाय और साहित्य, पृ. 367, 434–35

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

8. डॉ. मोतीलाल मेनारिया–राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ. 284 गोविन्द अग्रवाल पृ. 404–405
9. सुन्दरदास के शिलालेख फतेहपुर नगर में लगा हुआ है। इनके कई शिष्यों के लेख भी डीडवाना और फतेहपुर में उपलब्ध हैं। ऐसी भी मान्यता है कि स्वामी जी के स्थान से कुछ सामान फतेहपुर चोर ले गए इन्हें चूरू के पास पकड़ा जिनसे नीवार का पलंग व जाजम मिली है जो अब चूरू में है। गोविन्द अग्रवाल चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास पृ. 407
10. चरण पादुकाएं पहले दादूद्वारे की छत पर थी। ऐसा कहा जाता है कि जोर्णोद्धार के समय इन्हें खो दिया गया है।
11. पी. डबल्यू केप्टन पाऊलेट – गजेटियर आफ बीकानेर स्टेट पृ.90–91 मुन्शी सोहन लाल तवारिख, राज श्री बीकानेर पृ. 57–58 गोविन्द अग्रवाल, चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, पृ. 411
12. चन्द्रदान चारण – अलखिया सम्प्रदाय पृ. 39
13. गोविन्द अग्रवाल, चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास पृ. 412
14. वही, पृ.412
15. रामवल्लभ सोमानी जैन इन्स्क्रिप्सन ऑफ राजस्थान पृ. 172–73 श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा, बीकानेर जैन लेख संग्रह स. 2439, 2458, 2460, 2461 एवं 2462
16. श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा उक्त लेख में स. 2889 से 2896
17. श्री राम वल्लभ सोमानी – जैन इन्स्क्रिप्सन्स आफ राज. पृ. 172
18. गोविन्द अग्रवाल, चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, पृ. 416
19. वही, पृ. 417
20. चूरू मण्डल में तेरापंथ का बड़ा प्रभाव रहा है। माघ सुदि 7 संवत् 2023 को तेरापंथ संघ में 500 साध्वियां व 161 साधु थे जिनमें 29 साध्वियां व 78 साधु चूरू क्षेत्र में थे। मुनि नागराज जी यहाँ के एक उल्लेखनीय यति रहे हैं। इन्हें डी. लिट. की उपाधि भी प्रदान की गई है।
21. श्री गोविन्द अग्रवाल, चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास, पृ. 419 वरदा वर्ष 15 अंक 2